

GUIDED POOJA SEVA



श्री गृह प्रवेश पूजा विधि

Griha Pravesh Pooja Vidhi — Vastu Shanti & Griha Laxmi Puja

पूजा क्रम, यजमान निर्देश और संपूर्ण मंत्र-सूत्र

यह मार्गदर्शिका पूजा का हर चरण — संकल्प, मंत्र, अर्पण, दूध उफान, आरती और प्रसाद — पूर्ण विधि-विधान और मंत्रों सहित सरल एवं व्यवस्थित क्रम में बताती है।

1. पूजा का उद्देश्य

गृह प्रवेश (Griha Pravesh) नए घर में प्रवेश का पवित्र वैदिक संस्कार है। इस पूजा का उद्देश्य घर को शुद्ध करना, नकारात्मक ऊर्जा दूर करना, वास्तु दोषों का निवारण करना और घर में सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य व शांति का आगमन करना है। यह संस्कार भगवान गणेश, वास्तु पुरुष, लक्ष्मी-नारायण और नवग्रह की पूजा के साथ संपन्न होता है। इस दिन दूध उफान की परंपरा घर में समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।

महत्वपूर्ण: क्षेत्र, परंपरा और परिवार की मान्यता के अनुसार क्रम में छोटे अंतर हो सकते हैं। यह PDF इस पूजा के लिए व्यावहारिक और व्यवस्थित क्रम देती है।

2. गृह प्रवेश के प्रकार

प्रकार	अर्थ	अवसर
अपूर्व गृह प्रवेश	पहली बार नए घर में प्रवेश	नया घर खरीदने या बनाने पर
सपूर्व गृह प्रवेश	नवीनीकरण के बाद पुनः प्रवेश	घर की मरम्मत/रिनोवेशन के बाद
द्वन्द्व गृह प्रवेश	लंबे समय बाद वापसी	यात्रा या प्रवास के बाद घर लौटने पर

3. पूजा से पहले तैयारी

विषय	तैयारी
स्थान	घर की मुख्य पूजा स्थली या मुख्य कक्ष — प्रवेश द्वार की ओर से व्यवस्थित करें।
द्वार सज्जा	मुख्य द्वार पर आम के पत्तों का तोरण, रंगोली और हल्दी-कुमकुम से स्वागत चिन्ह बनाएं।
यजमान	स्नान करके स्वच्छ नए वस्त्र धारण करें। परिवार साथ बैठे।
प्रतिमा	भगवान गणेश, लक्ष्मी-नारायण की मूर्ति/चित्र स्थापित करें। कलश अवश्य रखें।
दूध की तैयारी	नए बर्तन में दूध उफान के लिए रखें — यह गृह प्रवेश की विशेष परंपरा है।
वातावरण	मोबाइल, टीवी का शोर कम रखें। पूजा के समय मन शांत और उत्सवपूर्ण रखें।

4. पूजा सामग्री सूची

- पूजा चौकी और स्वच्छ लाल/पीला वस्त्र
- गणेश जी की मूर्ति/चित्र
- लक्ष्मी-नारायण की मूर्ति/चित्र
- कलश, जल, आम/अशोक पत्ते
- नारियल, सुपारी, सिक्का
- रोली, हल्दी, कुमकुम, चंदन
- अक्षत (चावल), पुष्प और माला
- दूर्वा घास, मोदक/लड्डू
- नया बर्तन (दूध उफान के लिए)
- दूध (नया, शुद्ध)
- धूप, दीप, कपूर, घी/तेल
- पंचामृत: दूध, दही, घी, शहद, शक्कर
- फल (केला, नारियल, सेब, आम)
- पान, सुपारी, लौंग, इलायची
- नए चावल, नमक, गुड़
- जल पात्र, चम्मच, थाली
- आम के पत्ते (तोरण हेतु)
- रंगोली सामग्री
- दक्षिणा और आरती थाली
- यज्ञोपवीत / जनेऊ

5. संक्षिप्त पूजा क्रम — एक नजर में

क्रम	विधि	यजमान क्या करें
1	द्वार पूजन और गृह शुद्धि	मुख्य द्वार पर खड़े होकर प्रार्थना करें।
2	दीप प्रज्वलन और गणेश स्तुति	दीपक जलाएं, गणेश जी का स्मरण करें।
3	आचमन और शुद्धिकरण	जल से आचमन करें, मंत्र सुनें।
4	संकल्प	नाम, गोत्र, स्थान, तिथि और उद्देश्य बोलें।
5	कलश स्थापना	श्रद्धा से कलश पूजन में सहभाग करें।
6	गणेश पूजा	पुष्प, दूर्वा और मोदक अर्पित करें।
7	वास्तु पुरुष पूजा	घर के चारों दिशाओं में जल/पुष्प अर्पित करें।
8	लक्ष्मी-नारायण पूजा	षोडशोपचार — जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करें।
9	दूध उफान (क्षीर उत्सर्जन)	नए बर्तन में दूध उबालें — उफान आने दें।
10	गृह प्रवेश	दाहिने पैर से घर में प्रवेश करें।
11	आरती और पुष्पांजलि	परिवार सहित आरती करें।
12	क्षमा प्रार्थना और प्रसाद	प्रणाम करें, प्रसाद ग्रहण करें।

6. विस्तृत पूजा विधि

द्वार पूजन — गृह में प्रवेश से पूर्व

पूजा से पहले मुख्य द्वार पर खड़े होकर घर को प्रणाम करें। द्वार पर हल्दी, कुमकुम और अक्षत से स्वस्तिक बनाएं।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः।

यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

Om Vastoshpate Pratijanihyasman Tsvaavesho Anamivo Bhava Nah ।

Yattvemuhe Prati Tanno Jushasva Sham No Bhava Dvipade Sham Chatushpade ॥

यह वास्तु देवता को घर में स्वागत का मंत्र है। इससे घर में शांति और समृद्धि की प्रार्थना की जाती है।

दीप प्रज्वलन और मंगलाचरण

ॐ गं गणपतये नमः॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

Om Gam Ganapataye Namah //

Vakratunda Mahakaya Suryakoti Samaprabha /

Nirvighnam Kuru Me Deva Sarva Karyeshu Sarvada //

आचमन और संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर संकल्प बोलें। यजमान का नाम, गोत्र, स्थान, तिथि और उद्देश्य बोलें।

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ... अमुक-गोत्रोत्पन्नो अमुक-नाम-अहं

मम गृहस्य प्रवेशनार्थं वास्तुशान्त्यर्थं लक्ष्मीकटाक्षप्राप्त्यर्थं

गृहप्रवेश-पूजां करिष्ये।

Om Tatsat ... Aham Amuka-Gotrotpannah Amuka-Nama

Mama Grihasya Praveshanartham Vastushanti-Artham Lakshmikataaksha-Prptyartham

Griha-Pravesh Pujam Karishye.

7. मुख्य पूजा उपचार — 16 उपचार (षोडशोपचार)

लक्ष्मी-नारायण और वास्तु देव की पूजा षोडशोपचार विधि से की जाती है।

क्रम	उपचार	मंत्र (संक्षिप्त)	यजमान क्या करें
1	ध्यान + आवाहन भगवान को पधारने का निवेदन	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। आवाहयामि स्थापयामि॥	पुष्प लेकर चरणों में अर्पित करें।
2	आसन	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। आसनं समर्पयामि॥	अक्षत या पुष्प अर्पित करें।
3	पाद्य चरण धोने को जल	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। पाद्यं समर्पयामि॥	थोड़ा जल अर्पित करें।
4	अर्घ्य	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। अर्घ्यं समर्पयामि॥	जल पात्र से थोड़ी मात्रा अर्पित करें।
5	आचमन	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥	कुछ बूंद जल अर्पित करें।
6	स्नान / अभिषेक	गङ्गा च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐ स्नानं समर्पयामि॥	जल या पंचामृत अर्पित करें।
7	वस्त्र	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। वस्त्रं समर्पयामि॥	वस्त्र या अक्षत अर्पित करें।
8	यज्ञोपवीत	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥	जनेऊ या मौली अर्पित करें।
9	गंध / चंदन	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। गन्धं समर्पयामि॥	चंदन या कुमकुम अर्पित करें।
10	अक्षत + पुष्प	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। अक्षतान् पुष्पाणि च समर्पयामि॥	अक्षत और फूल अर्पित करें।
11	धूप	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। धूपमाग्रापयामि॥	धूप भगवान के सम्मुख घुमाएं।
12	दीप	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। दीपं दर्शयामि॥	दीपक भगवान के समक्ष दिखाएं।

क्रम	उपचार	मंत्र (संक्षिप्त)	यजमान क्या करें
13	नैवेद्य	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥	फल, मिठाई और जल अर्पित करें।
14	ताम्बूल / दक्षिणा	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ताम्बूलं दक्षिणां च समर्पयामि॥	पान-सुपारी और दक्षिणा अर्पित करें।
15	नीराजन (आरती)	ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। नीराजनं समर्पयामि॥	परिवार सहित आरती करें।
16	प्रदक्षिणा-नमस्कार	यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे॥	तीन बार प्रदक्षिणा करें या स्थान पर नमस्कार करें।

सरल नियम: सामग्री उपलब्ध न हो तो पुष्प या अक्षत अर्पित करें। प्रत्येक उपचार के बाद श्रद्धा से "ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः" का जप करें।

8. वास्तु पुरुष पूजा

घर के मुख्य कक्ष में वास्तु पुरुष (घर के देवता) की पूजा की जाती है। वास्तु पुरुष सभी दिशाओं के रक्षक हैं।

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।

वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् त्वावेशो अनमीवो भवा नः।

यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

Om Vastupurushaya Namah।

Vastoshpate Pratijanihyasman Tsvaavesho Anamivo Bhava Nah।

Yattvemuhe Prati Tanno Jushasva Sham No Bhava Dvipade Sham Chatushpade॥

घर के प्रत्येक कोण में थोड़ा जल छिड़कते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें।

9. दूध उफान (क्षीर उत्सर्जन) — विशेष परंपरा

गृह प्रवेश की सबसे महत्वपूर्ण परंपरा है दूध उफान। यह घर में समृद्धि और प्रचुरता का प्रतीक है।

क्रम	क्रिया	महत्व
1	नए बर्तन में शुद्ध दूध डालें।	नवीनता और शुभ आरंभ का प्रतीक।
2	चूल्हे/स्टोव पर रखें — पहली बार इसी घर में जलाएं।	घर का पहला अग्नि-कार्य शुभ माना जाता है।
3	दूध उबलने दें और उफान आने दें।	उफान = घर में समृद्धि और वृद्धि का आशीर्वाद।
4	उफान आने पर सभी परिवारजन मंत्र बोलें।	एकता और मंगल भावना।
5	दूध को प्रसाद के रूप में सभी को दें।	भगवान का आशीर्वाद — सभी ग्रहण करें।

ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः।

यां देवाः स्तुवन्ति नित्यं यां भोगैरर्चयन्त्यपि।

तां शुभां लक्ष्मीमाह्वये देव्यां सदनमागच्छ॥

Om Shri Mahalakshmyai Namah।

Yam Devah Stuvanti Nityam Yam Bhogairachayanti Api।

Tam Shubham Lakshmimahvaye Devyam Sadanamaagatchchha॥

दूध उफान के समय यह मंत्र बोलते हुए लक्ष्मी जी का आह्वान करें।

10. गृह प्रवेश — दाहिने पैर से प्रवेश

पूजा के बाद यजमान और परिवार दाहिने पैर से घर में प्रवेश करें। प्रवेश करते समय निम्न मंत्र बोलें:

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।

जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

श्रीमहालक्ष्मी इह आगच्छ इह तिष्ठ।

सर्वमङ्गलं मङ्गले शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

Om Namo Brahmanyadevaya Go-Brahmanahitaya Cha /

Jagadhitaya Krishnaya Govindaya Namo Namah //

Sarva Mangala Mangalye Shive Sarvartha Sadhike /

Sharanye Tryambake Devi Narayani Namoastute //

प्रवेश के समय दाहिना पैर पहले अंदर रखें। माँ लक्ष्मी की मूर्ति या कलश परिवार की महिला सदस्य उठाकर अंदर लाएं।

11. प्रमुख मंत्र

गणेश ध्यान मंत्र

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

Vakratunda Mahakaya Suryakoti Samaprabha /

Nirvighnam Kuru Me Deva Sarva Karyeshu Sarvada //

लक्ष्मी आवाहन मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।

या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्॥

Om Shreem Hreem Shreem Mahalakshmyai Namah /

Namaste Sarvadevaanam Varadassi Haripriye /

Ya Gatistwatprapannanam Sa Me Bhuyat Tvadarchanat //

वास्तु शांति मंत्र

ॐ वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।

आदित्याइव सविता सुप्रणीती राये च नः सुप्रजासस्कृधीहि॥

Om Vastoshpate Shagmaya Samsada Te Sakshimahi Ranvaya Gatumatya /

Adityaiva Savita Supraniti Raye Cha Nah Suprajasaskridhihi //

यह मंत्र घर की शांति, सुख और वास्तु दोष निवारण के लिए है।

श्री सूक्त — लक्ष्मी आवाहन

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

*Om Hiranyavarnam Harineem Suvarna-Rajatastrajam /
Chandram Hiranmayim Lakshmim Jatavedo Ma Avaha //*

*Tam Ma Avaha Jatavedo Lakshmimana-Pagaaminim /
Yasyam Hiranyam Vindeyam Gamasavam Purushanahm //*

श्री सूक्त के इन श्लोकों से माँ लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है।

मंत्र पुष्पांजलि

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकम् महिमानः सचन्ते यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

*Yajnena Yajnamayajanta Devah Tani Dharmani Prathamanyasan /
Te Ha Nakam Mahimanah Sachante Yatra Purve Sadhyah Santi Devah //*

12. आरती और समापन

लक्ष्मी आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत हरि विष्णु विधाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता।
सूर्यचन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रूप निरंजनी सुख संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल निवासिनि तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी भवनिधि की त्राता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम रहती सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता मन नहीं घबराता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

लक्ष्मी जी की आरती जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

पुष्पांजलि

हाथ में पुष्प और अक्षत लेकर भगवान से घर में सुख, समृद्धि और शांति की प्रार्थना करें।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वर॥

*Nana Sugandhi Pushpani Yathakalodbhavani Cha /
Pushpanjalim Maya Dattam Grihana Parameshvara //*

क्षमा प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

Mantrahinam Kriyahinam Bhaktihinam Sureshvara ।

Yatpujitam Maya Deva Paripurnam Tadastu Me ॥

13. घर के सदस्यों की भूमिकाएं

भूमिका	क्या करें
मंत्र-पाठ	स्वयं यजमान, परिवार का कोई सदस्य अथवा पुजारी — जो भी उपस्थित होकर मंत्रोच्चारण करें।
यजमान	संकल्प बोलना, अर्पण करना, दूध उफान में भाग लेना, आरती और प्रसाद ग्रहण।
गृहिणी (महिला)	कलश या लक्ष्मी मूर्ति उठाकर घर में दाहिने पैर से पहले प्रवेश करें।
परिवार/भक्त	श्रद्धा से बैठना, नाम-स्मरण करना, साथ में मंत्र बोलना और प्रसाद ग्रहण करना।

14. यजमान के लिए आसान निर्देश

- पूजा शुरू होने से 15-20 मिनट पहले सामग्री व्यवस्थित रखें।
- संकल्प के लिए नाम, गोत्र और उद्देश्य पहले से तय रखें।
- द्वार पर तोरण, रंगोली और स्वस्तिक पूजा से पहले बना लें।
- दूध उफान के लिए नया बर्तन और शुद्ध दूध तैयार रखें।
- घर में प्रवेश हमेशा **दाहिने पैर से** करें।
- यदि कोई सामग्री उपलब्ध न हो तो पुष्प या अक्षत से भावपूर्वक अर्पण करें।
- प्रसाद को भगवान का आशीर्वाद मानकर श्रद्धा से ग्रहण करें।

15. संकल्प फॉर्म

यजमान का नाम	
गोत्र	
परिवार के सदस्य	
नए घर का पता	
पूजा तिथि	

समापन भाव

हे माँ लक्ष्मी, भगवान विष्णु और वास्तु देव! इस घर को सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति का धाम बनाएं। सभी परिवारजनों पर अपनी कृपा बनाए रखें।

॥ ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः ॥

॥ शुभं भवतु, मंगलं भवतु ॥

Prepared for Guided Pooja Seva. This guide provides the complete sequence and mantras for this pooja, to be followed together with full devotion. Recitation details may vary slightly by family tradition.